Dv – मांगो और तुम्हें दिया जाएगा; खोजो और तुम पाओगे; खटखटाओ
और दरवाजा तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा मत्ती ७:७-१२ और लुका
६:३१ | 1

– Save This Page as a PDF–

मांगो और तुम्हें दिया जाएगा; खोजो और तुम पाओगे;खटखटाओ और दरवाजा तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा मत्ती ७:७-१२ और लुका ६:३१

खोदाई: इन छंदों में यीशु ईश्वर के बारे में किस पर जोर दे रहे हैं? यह शिक्षा उनके शिष्यों को किस प्रकार प्रोत्साहित कर रही है? यहाँ प्रार्थना का मार्गदर्शक सिद्धांत क्या है? राज्य की धार्मिकता फरीसियों और टोरा-शिक्षकों की धार्मिकता से किस प्रकार भिन्न है? क्या ये आयतें यह कहती हैं कि जब आप परमेश्वर से कुछ मांगते हैं तो वह आपको मिल जाता है?

विचार करें: क्या यह उस व्यक्ति का आचरण है जिसके पास पहले से ही मोक्ष है, या इसे प्राप्त करने का साधन है? क्या आप जो कुछ भी चाहते हैं उसे माँगने के लिए यह एक खाली चेक है, और परमेश्वर इसे आपको देने के लिए बाध्य है? आपके लिए इस शिक्षण को समझने की कुंजी क्या है? क्या आप दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ व्यवहार करें? क्या यह आसान है? क्या आपका प्रभामंडल कभी-कभी फिसल जाता है? आप दूसरों के साथ दुर्व्यवहार क्यों करते हैं? क्या आप जानते हैं कि आपको क्या परेशान करता है? क्या ऐसी कोई परिस्थितियाँ हैं जिनके बारे में आप पहले से ही अनुमान लगा सकते हैं कि आपकी कमजोरी की भरपाई हो जाएगी?

यीशु के तेरहवें उदाहरण में, हमारे उद्धारकर्ता ने सच्ची धार्मिकता का सार बताया और बताया कि टोरा फरीसी यहूदी धर्म से कैसे भिन्न था। ये छंद निर्णयात्मक भावना के बारे में नकारात्मक शिक्षा और सुनहरे नियम की सकारात्मक शिक्षा के बीच एक आदर्श पुल बनाते हैं। यह उन लोगों के लिए प्रभु के सबसे महान और सबसे व्यापक वादों में से एक है जो उनके हैं। इस महान वादे के प्रकाश में हम दूसरों से पूरी तरह से प्यार करने और दूसरों के लिए पूरी तरह से त्याग करने के लिए स्वतंत्र महसूस कर सकते हैं, क्योंकि हमारे स्वर्गीय पिता हमारे लिए अपनी उदारता में उदाहरण स्थापित करते हैं और वादा करते हैं कि हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए उनके शाश्वत और असीमित खजाने तक हमारी पहुंच है। उनके जैसा. हम दूसरों के साथ वही कर सकते हैं जो हम अपने लिए चाहते हैं बिना उसके संसाधनों के ख़त्म हो जाने और कुछ भी न बचे रहने के डर के बिना।

Dv – मांगो और तुम्हें दिया जाएगा; खोजो और तुम पाओगे; खटखटाओ
और दरवाजा तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा मत्ती ७:७-१२ और लुका
६:३१ | 2

प्रार्थना से संबंधित कुछ पहले के प्रश्नों को
संबोधित करने के बाद (लिंक देखे Dp – जब आप प्रार्थना करें, अपने कमरे में जाएं और दरवाजा बंद कर लें), येशुआ अब एडोनाई की योजना की तलाश में कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों का सारांश देता है। ये छंद हमें याद दिलाते हैं कि प्रभु की इच्छा जानने के लिए प्रार्थना भी एक प्रमुख तत्व है। प्रार्थना का उत्तर अक्सर आसानी से या जल्दी नहीं मिलता। अक्सर यह पिता की तलाश की लंबी प्रक्रिया का परिणाम होता है। इसलिए, पवित्र आत्मा परमेश्वर ने मानव लेखक मैथ्यू को हमें लिखने और कहने के लिए प्रेरित किया: मांगो, और परमेश्वर तुम्हें देगा। खोजो और तुम पाओगे। खटखटाओ, और तुम्हारे लिये द्वार खुल जाएगा (मैथ्यू ७:७)। यह तथ्य कि हमें दृढ़ रहना चाहिए, पूछने, खोजने और खटखटाने के वर्तमान अनिवार्य काल से देखा जाता है। विचार दृढ़ता का है. यह ऐसा है मानो प्रभु हमसे कह रहे हों, “पूछते रहो; खोजते रहो; खटखटाते रहो।” हम तीन क्रियाओं में तीव्रता की प्रगति भी देखते हैं, केवल पूछने से लेकर सक्रिय खोज से लेकर अधिक आक्रामक दस्तक देने तक। फिर भी इनमें से कोई भी अवधारणा अस्पष्ट नहीं है। सबसे छोटा बच्चा पूछना, खोजना और खटखटाना जानता है।

क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है। कुछ लोकप्रिय व्याख्याओं के विपरीत, यह कविता कोई खाली चेक नहीं है। सबसे पहले, हर कोई उन विश्वासियों को संदर्भित करता है जो स्वर्गीय पिता से संबंधित हैं (गलातियों ६:१०; इफिसियों २:१९)। जो लोग परमेश्वर के बच्चे नहीं हैं वे उनके पास अपने पिता के रूप में नहीं आ सकते। दूसरा, जो लोग इस वादे का दावा करते हैं उन्हें अपने पिता की आज्ञाकारिता में रहना चाहिए। और परमेश्वर हमें वह देता है जो हम माँगते हैं क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और वही करते हैं जो उसे प्रसन्न करता है (प्रथम यूहन्ना ३:२२)। तीसरा, पूछने का हमारा मकसद सही होना चाहिए। जेम्स बताते हैं, जब आप मांगते हैं, तो आपको मिलता नहीं है, क्योंकि आपके मांगने का कारण गलत है। आप चीज़ें इसलिए चाहते हैं ताकि आप उनका उपयोग अपने स्वार्थी सुखों के लिए कर सकें (याकूब ४:३)। अंततः, हमें उसकी इच्छा के प्रति समर्पित होना चाहिए। यदि हम ईश्वर और धन दोनों की सेवा करने का प्रयास कर रहे हैं (मैथ्यू ६:२४बी), तो हम इस वादे का दावा नहीं कर सकते। उस व्यक्ति को प्रभु से कुछ भी प्राप्त करने की आशा नहीं करनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति दोचित्त होता है और अपने सभी कार्यों में अस्थिर होता है (याकूब १:७-८)। जैसा कि जॉन स्पष्ट करता है: यह वह आत्मविश्वास है जो हमें

Dv – मांगो और तुम्हें दिया जाएगा; खोजो और तुम पाओगे; खटखटाओ
और दरवाजा तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा मत्ती ७:७-१२ और लुका
६:३१ | 3

ईश्वर के पास आने में है: कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ भी मांगते हैं, तो वह हमें सुनता है (प्रथम युहोना ५:१४)। यह विश्वास करना कि प्रभु किसी अन्य आधार पर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देंगे, अभिमान और मूर्खता है।

जो खोजता है वह पाता है; और जो खटखटाएगा उसके लिये द्वार खोला जाएगा (मत्ती ७:८)। तीव्रता की प्रगति यह भी बताती है कि हमारी ईमानदार प्रार्थनाएँ निष्क्रिय नहीं होनी चाहिए। अगर हम नौकरी मांग रहे हैं तो हमें अपने शयनकक्ष में बैठकर दरवाजे पर दस्तक का इंतजार नहीं करना चाहिए। हमें उनके मार्गदर्शन और प्रावधान की प्रतीक्षा करते हुए नौकरी की तलाश में रहना चाहिए। यदि हमारे पास भोजन नहीं है, तो हमें यदि संभव हो तो इसे खरीदने के लिए पैसे कमाने का प्रयास करना चाहिए। जब हम उस चीज़ का उपयोग करने के इच्छुक नहीं होते जो उसने हमें पहले ही दे दी है, तो प्रभु से और अधिक प्रदान करने के लिए कहना विश्वास नहीं, बल्कि अनुमान है। लेकिन, जैसे-जैसे विश्वासी प्रार्थना करना जारी रखेंगे, उत्तर प्रदान किए जाएंगे और दरवाजे खोले जाएंगे। पिता हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने का वादा करता है, लेकिन उसका उत्तर वह नहीं हो सकता जिसकी हमने आशा की थी। उसका उत्तर कभी-कभी “हाँ”, कभी-कभी “नहीं” और यहाँ तक कि कभी-कभी “प्रतीक्षा” होता है। लेकिन, निश्चिंत रहें, परमेश्वर का उत्तर अपने सही समय पर आएगा।

जो लोग यहां मसीहा के वादे पर सवाल उठाते हैं, उनके लिए वह इस सच्चाई की पुष्टि के लिए एक छोटा दृष्टांत देते हैं। तुम में से कौन है, यदि तुम्हारा बेटा रोटी मांगे, तो उसे पत्थर देगा? या यदि वह मछली मांगे, तो उसे सांप दे दे (मत्ती ७:९-१०)? मछली वैध कोषेर भोजन है, जबकि साँप (या शायद गलील सागर की मछली) स्पष्ट रूप से नहीं है। एक प्यार करने वाला यहूदी पिता अपने बेटे को कभी भी धोखा नहीं देगा और उसे अशुद्ध भोजन खाने के लिए उकसाकर परमेश्वर के वचन का अपमान नहीं करेगा। तो, स्पष्ट उत्तर यह है कि कोई भी प्यार करने वाला पिता अपने बेटे की शारीरिक या आध्यात्मिक ज़रूरतों को नज़रअंदाज़ नहीं करेगा।

भले ही तुम बुरे हो (मैथ्यू ७:११ए)! ग्रीक का शाब्दिक अर्थ है, पोनापोइ ‘ओंटेस, या बुरा होना। यहां मानवजाति के पतित, दुष्ट या पापी स्वभाव के बारे में कई विशिष्ट धर्मशास्त्रीय शिक्षाओं में से एक है; यहाँ दुष्ट और पाप पर्यायवाची हैं। येशुआ उन विशिष्ट पिताओं की बात नहीं कर रहा है जो विशेष रूप से क्रूर और दुष्ट हैं, बल्कि सामान्य रूप से मानव पिताओं की बात कर रहे हैं, जो स्वभाव से पापी हैं। इसे पूर्ण भ्रष्टता का सिद्धांत कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि पापी अपनी पापपूर्ण स्थिति से खुद को निकालने में पूरी तरह असमर्थ है। पाप की यह लाइलाज बीमारी हमें आदम से मिली है (उत्पत्ति Ba पर मेरी टिप्पणी देखें – महिला ने फल देखा और खाया), और नई वाचा में, रब्बी शाऊल हमें सिखाते हैं कि पाप दुनिया में एक के माध्यम से आया आदमी, एडम (रोमियों ५:१२ए)। संसार सिखाता है कि हम पापरहित पैदा हुए हैं, और हमें पापी बनने के लिए कुछ कठोर घटित होना होगा; लेकिन, परमेश्वर का वचन कहता है कि जन्म के समय हम सभी पापी थे (भजन ५१:५), और मसीह में एक नई रचना बनने के लिए

Dv – मांगो और तुम्हें दिया जाएगा; खोजो और तुम पाओगे; खटखटाओ
और दरवाजा तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा मत्ती ७:७-१२ और लुका
६:३१ | 4

(दूसरा कुरिन्थियों ५:१७), कुछ कठोर होना आवश्यक है। हमें अपनी पापपूर्ण स्थिति की निराशा को पहचानने, समर्पण करने और येशुआ हामेशियाच से हमारे जीवन पर नियंत्रण करने, हमारे दिलों के सिंहासन पर बैठने और हमारे जीवन का परमेश्वर बनने के लिए कहने की जरूरत है।

यद्यपि तुम बुरे हो – जैसे पापी मानव पिता होते हैं – और अपने बच्चों को अच्छे उपहार देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को कितना अच्छा उपहार देगा (मत्ती ७:११)! इंसानों के बीच सबसे स्वाभाविक रूप से निस्वार्थ रिश्ता माता-पिता का अपने बच्चों के साथ होता है। हम किसी और की तुलना में अपने बच्चों के लिए बलिदान देने की अधिक संभावना रखते हैं, यहाँ तक कि अपनी जान तक दे सकते हैं। फिर भी, सबसे महान मानवीय माता-पिता के प्रेम की तुलना ईश्वर से नहीं की जा सकती। यहां, ईसा मसीह व्याख्या के रब्बी सिद्धांत का उपयोग करते हैं जिसे सबसे पहले रब्बी हिलेल (१०AD) द्वारा सात सिद्धांतों में विस्तृत किया गया था। चूँकि इन सिद्धांतों का उपयोग मसीहा के जीवनकाल के दौरान किया गया था, इसलिए उनके शब्दों को समझना प्रासंगिक है। यहां, वह अपनी प्रकट इच्छा को समझाने के लिए मिडडॉट (हिब्रू: हमारे चरित्र के मानदंड) सिद्धांतों में से एक का उपयोग करता है: यदि एक सांसारिक पिता अपने बच्चों के लिए अच्छे उपहार प्रदान करता है, तो एडोनाई अपने आध्यात्मिक बच्चों के लिए कितना अधिक प्रदान करेगा।

आगे जो कुछ भी है उसे संपूर्ण पर्वतीय उपदेश के सर्वोत्तम सारांश कथनों में से एक माना जा सकता है। एक प्रसिद्ध तल्मूडिक कहानी में, रब्बी हिलेल को एक दिन एक गैर-यहूदी ने एक पैर पर खड़े होकर सभी टोरा का सारांश देने के लिए कहा था। वह स्पष्टतः त्वरित उत्तर चाहता था! बताया जाता है कि हिल्लेल ने उत्तर दिया, “जो तुम्हारे प्रति घृणित है, वह अपने पड़ोसी के साथ मत करो। यह संपूर्ण टोरा है” (ट्रैक्टेट सैन्हेड्रिन ३१ए)। तो जिसे हिलेल ने नकारात्मक शब्दों में समझाया, येशुआ ने सकारात्मक शब्दों में वर्णित किया जिसे आमतौर पर सुनहरा नियम कहा जाता है: दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ व्यवहार करें, क्योंकि यही तोरा का अर्थ है और भविष्यवक्ताओं की शिक्षा है (मैथ्यू ७:१२ ; ल्यूक ६:३१)। हम दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह इस बात से निर्धारित नहीं होता है कि हम उनसे हमारे साथ कैसा व्यवहार करने की उम्मीद करते हैं या हम सोचते हैं कि उन्हें हमारे साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, बल्कि इस बात से तय होता है कि हम चाहते हैं कि वे हमारे साथ कैसा व्यवहार करें।

कई वर्षों तक बुनियादी संगीत वाद्ययंत्र हार्पसीकोर्ड था। जैसे ही इसकी कुंजियाँ दबाई जाती हैं, किसी दिए गए तार को वांछित स्वर बनाने के लिए तोड़ा जाता है, ठीक वैसे ही जैसे एक गिटार के तार को पिक से तोड़ा जाता है। लेकिन, उस तरह से बनाया गया स्वर शुद्ध नहीं था, और तंत्र अपेक्षाकृत धीमा और सीमित है। अठारहवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही के दौरान, बीथोवेन के जीवनकाल के दौरान, एक अज्ञात संगीतकार ने हार्पसीकोर्ड को संशोधित किया ताकि चाबियाँ छोटे हथौड़ों को सक्रिय

Dv – मांगो और तुम्हें दिया जाएगा; खोजो और तुम पाओगे; खटखटाओ
और दरवाजा तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा मत्ती ७:७-१२ और लुका
६:३१ | 5

कर दें जो तारों को तोड़ने के बजाय मारते थे। उस छोटे से परिवर्तन के साथ, एक बड़ा सुधार किया गया जो पियानो को जन्म देगा और संपूर्ण संगीत जगत को मौलिक रूप से उन्नत करेगा। इसने हमें वह भव्यता और व्यापकता प्रदान की जो पहले कभी नहीं देखी गई थी।

यह एक प्रकार का क्रांतिकारी परिवर्तन है जो यीशु सुनहरे नियम में देते हैं। इस मूल सिद्धांत का हर दूसरा रूप अन्य सभी धर्मों और दर्शनों द्वारा पूरी तरह से नकारात्मक शब्दों में दिया गया था क्योंकि यह पापी मानव जाति के लिए उतना ही दूर तक जा सकता था। वे स्वार्थ की अभिव्यक्ति हैं, प्रेम की नहीं। प्रेरणा हमें केवल दूसरों को नुकसान पहुंचाने से रोकती है ताकि वे हमें नुकसान न पहुंचाएं। नियम के वे नकारात्मक रूप सुनहरे नहीं हैं, क्योंकि वे मुख्य रूप से भय और आत्म-संरक्षण से प्रेरित हैं। जैसा कि बाइबल हमें लगातार मानव जाति के पापी, पतित, मानव स्वभाव की याद दिलाती है: कोई भी ऐसा नहीं है जो अच्छा करता हो, एक भी नहीं; हममें से प्रत्येक अपने-अपने मार्ग की ओर मुड़ गया है (रोमियों ३:१२बी; यशायाह ५३:६बी)। केवल मसीहा ही हमें सत्य की संपूर्णता प्रदान करते हैं, जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों को समाहित करता है। और केवल पवित्र आत्मा ही हमें उस पूर्ण सत्य के अनुसार जीने की शक्ति दे सकता है।

यह अनिवार्य रूप से टोरा के सिद्धांत को सारांशित करता है: आप अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करेंगे, जिसे यीशु ने मैथ्यू २२:३४-४० में दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा के रूप में पहचाना है। किसी शिक्षण का सामान्य सारांश देने की तकनीक काफी हद तक उस चीज़ से मिलती-जुलती है जिसे रब्बी क्लाल या सामान्य सिद्धांत कहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मोशे की सभी ६१३ आज्ञाओं को प्रेम के सिद्धांत द्वारा संक्षेपित किया जा सकता है। यहूदी और अन्यजाति दोनों, येशुआ हामेशियाच में विश्वास करने वालों के लिए, यह हमारी सरल, लेकिन मौलिक प्राथमिकता है।

पिता, हमें अपनी इच्छा के बारे में आश्वस्त करें कि हम आपको, आपके जीवन को, आपके प्रेम को जानें। हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर की आशा करने और हमारी इच्छाओं को आपकी पूर्ण इच्छा के अधीन करने में हमारी सहायता करें।